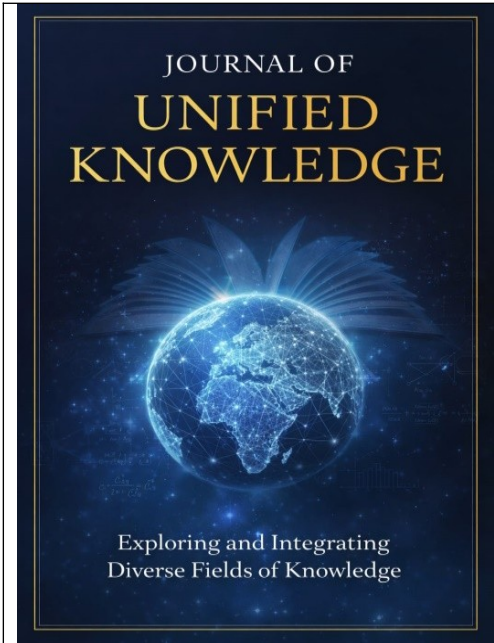




Corresponding author:

डॉ.आभा सिंह¹, डॉ.संतोष गहलोत²

1सह आचार्या शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, (मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूं

2सहायक आचार्या, एम.एस.वाई टी.टी. कॉलेज, उदयरामसर, बीकानेर

ISSN: 3139-227X

Submission: June 03, 2026

Review : June 22, 2026

Published : July 30, 2026

"बी.एड दो वर्षीय पाठ्यक्रम में ई. पी. सी विषय को लागू करने पर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन "

डॉ.आभा सिंह¹, डॉ.संतोष गहलोत²

1सह आचार्या शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, (मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूं

2सहायक आचार्या, एम.एस.वाई टी.टी. कॉलेज, उदयरामसर, बीकानेर

प्रस्तावना-

मनुष्य जब जन्म लेता है, तब पशुतुल्य होता है अर्थात्, उसमें विवेक का अभाव होता है। मानव में विवेक की उत्पत्ति, सोचने-समझने की शक्ति तथा पशुत्व से मनुष्यत्व प्रदान करने का कार्य शिक्षा द्वारा किया जाता है। शिक्षा. एक ऐसा महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिसमें व्यक्ति को प्रगतिपथ पर अग्रसर करने का गुण होता है। शिक्षा हमारे समाज का आधार स्तम्भ हैं। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति समाज में उच्चतम स्थान प्राप्त करता है। शिक्षा के द्वारा ही इस समाज को योग्य नागरिक मिलते हैं जो न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में बल्कि अपने पारिवारिक और सामाजिक जीवन के लिए भी उपयोगी बनते हैं।

शिक्षा प्रदान करने का कार्य एक शिक्षक द्वारा किया जाता है। एक शिक्षक ही कुम्हार की भांति कच्ची मिट्टी रुपी बालक को ताराशता है और उसे एक

पहचान दिलाता है। जिस प्रकार एक कुम्हार कच्ची मिट्टी से किसी भी आकार या आकृति का बर्तन बनाकर उसे पकाकर एक उपयोगी वस्तु बना देता है। उसी प्रकार एक शिक्षक बालक को ताराशता है। उसकी कमियों को दूर करता है तथा उसे एक योग्य एवं सफल जीवन जीने के लिए तैयार करता है। प्रशिक्षित तथा अनुभवी शिक्षकों को तैयार करने हेतु हमारी सरकार कई प्रकार के पाठ्यक्रम उपलब्ध करवाती है। ऐसे ही पाठ्यक्रम में शामिल है बी.एड. (Bachelor-in Education) दो वर्षीय पाठ्यक्रम, जो शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। इस पाठ्यक्रम में भावी शिक्षक, तैयार किए जाते हैं तथा उन्हें विविध विषयों को पढ़ने एवं पढ़ाने की विधि सिखाई जाती है जिससे ये एक उच्च स्तर के शिक्षक के रूप में उभर सके। शिक्षकों को तैयार करने का कारखाना यदि बी.एड. महाविद्यालयों को माना जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय यह प्रयत्न करते हैं कि उत्तम व चरित्रवान शिक्षक देश को प्रदान करें। शिक्षक का विद्यालय में महत्वपूर्ण स्थान होता है।

सिर्फ विद्यालय ही नहीं समाज भी अध्यापक को आदर की दृष्टि से देखता है। शिक्षक ही है जो बौद्धिक परम्पराओं व तकनीकी को आने वाली हर पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं। शिक्षक उस सड़क के समान है जो स्वयं तो उसी स्थान पर रहती है परन्तु अपने शिष्यों को निश्चित गन्तव्य तक पहुंचा देता है। अपने विद्यार्थी के जीवन में प्रकाश को प्रज्वलित रखने हेतु सदैव प्रयत्नशील बना रहता है। शिक्षक स्वयं सदैव कुछ न कुछ सीखता रहता है अर्थात् वह स्वयं विद्यार्थी जीवन भी व्यतीत करता है। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा भी है कि “एक अध्यापक कभी भी वास्तविक अर्थों में नहीं पढ़ा सकता, जब तक वह खुद कुछ न कुछ सीख न रहा हो। एक दीपक दूसरे दीपक को कभी भी प्रज्वलित नहीं कर सकता जब तक कि उसकी अपनी लौ जलती न रहे।” शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे संस्कृति का संरक्षण, संवर्धन व हस्तांतरण किया जा सकता है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा को यदि हम समझना चाहते हैं तो हमें उस देश की संस्कृति को समझना चाहिए। संस्कृति वह आइना है जिसमें हमें शिक्षा के दर्शन होते हैं। शिक्षक ही शिक्षा का वाहक है जो विद्यार्थी के अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाकर ज्ञानरूपी प्रकाश दिखाता है तथा मानवता के पथ को प्रकाशित करता है। कोठारी कमीशन (1964-66) ने भी शिक्षकों को राष्ट्र निर्माण की संज्ञा दी है। अन्य अर्थ में हम समझ सकते हैं कि शिक्षक सामान्यतः वह सामाजिक व्यक्ति है जो अधिक उदार, चरित्रवान, मर्यादित एवं दयालु होता है।

शिक्षक को विद्यालय संगठन का हृदय माना जाता है। एक विद्यालय को सुचारू रूप से चलाने के लिए उसमें पर्याप्त संख्या में अलग-अलग विषयों के तथा शिक्षण कार्य में पारंगत, निपुण तथा कुशल अध्यापकों का होना अति आवश्यक है। शैक्षिक कार्यक्रमों की सफलता तथा असफलता शिक्षक के चरित्र, व्यवहार, कार्य क्षमता तथा उसके कार्य करने की प्रणाली पर निर्भर करती है। शिक्षण के क्षेत्र में हुए शैक्षिक तथा मनोवैज्ञानिक की खोज ने यह प्रमाणित कर दिया है कि शिक्षा में शिक्षक-छात्र अन्तःक्रिया में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ही होता है बालक का सर्वांगीण विकास करना। इसमें शिक्षक न सिर्फ बालक का शैक्षिक विकास करने में योगदान देता है बल्कि उसके शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक विकास करने में भी सहायक बनता है।

शोध के उद्देश्य -

1. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में ई. पी.सी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में ई.पी.सी के प्रति अभिरुचि का अध्ययन करना।
3. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की वृत्तिगत क्षमता पर ई.पी.सी. के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएं –

1. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति पर ई.पी.सी. विषय का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अभिरूचि पर ई.पी.सी. विषय का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
3. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की वृत्तिगत क्षमता पर ई.पी.सी. विषय का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
4. ग्रामीण व शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति पर ई.पी.सी. विषय के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।
5. ग्रामीण व शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अभिरूचि पर ई.पी.सी. विषय के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।
6. ग्रामीण व शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की वृत्तिगत क्षमता पर ई.पी.सी. विषय के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध से प्राप्त निष्कर्ष-

परिकल्पना संख्या 1

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को यदि ई.पी.सी. पाठ्यक्रम से संबंधित गतिविधियों के माध्यम से अध्ययन करवाया जाए तो उनमें शिक्षण अभिवृत्ति विकसित होती है। शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग, भ्रमण, यात्राएं स्मार्ट क्लास आदि न सिर्फ अभिवृत्ति विकसित करती हैं अपितु उनमें शैक्षिक गुणों का विकास भी करती हैं।

परिकल्पना संख्या 2

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को यदि ई.पी.सी. पाठ्यक्रम से संबंधित गतिविधियों के माध्यम से अध्ययन करवाया जाए तो उनमें शिक्षण के प्रति अभिरूचि का विकास होता है। रेखाचित्र तथा मानचित्र का प्रयोग शिक्षण को रोचक बनाता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करने से विद्यार्थी की शिक्षण के प्रति रुचि जागृत होती है, तो वही विद्यार्थी आदर्शवाद तथा नैतिकता संबंधी पक्षों में भी रुचि लेने लगते हैं तथा उनमें नैतिक गुणों का विकास होता है।

परिकल्पना संख्या 3

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को यदि ई.पी.सी पाठ्यक्रम में शामिल गतिविधियों के माध्यम से अध्ययन करवाया जाए तो प्रशिक्षणार्थी की वृत्तिगत क्षमता का विकास होता है। विद्यार्थी उस शिक्षक से अधिक प्रसन्न रहते हैं जो सहायक सामग्री का प्रयोग शिक्षण कार्य में करें। जो शिक्षक प्रेम एवं मित्रवत व्यवहार को अपनाता है, वही शिक्षक योग्य माना जाता है, ना कि शारीरिक दंड देने वाला शिक्षक। प्रशिक्षणार्थियों ने अध्यापन व्यवसाय को मानव सेवा का एक अच्छा माध्यम माना है। उनका मानना है कि जो शिक्षक व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य करवाए उसकी शैक्षणिक व्यावसायिक क्षमता विकसित होती है।

परिकल्पना संख्या 4

ई.पी.सी. विषय का अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन का शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों में अंतर नहीं पाया जाता है। पाठ्य सहगामी क्रियाएं, तकनीकी का प्रयोग, योग तथा व्यायाम, पुस्तकीय समीक्षा, शिक्षा शास्त्री तथा दर्शन शास्त्रियों का प्रभाव तथा शैक्षिक भ्रमण जैसी गतिविधियां, शहरी और ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों को समान रूप से प्रभावित करती है। ई.पी.सी. पाठ्यक्रम के प्रति उनकी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शहरी महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों तथा ग्रामीण महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की ई.पी.सी. विषय का अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव में अंतर नहीं पाया गया।

परिकल्पना संख्या 5

ई.पी.सी. विषय का अभिरूचि पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन का शहरी व ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों में अंतर पाया जाता है। शिक्षण में सहायक सामग्री का प्रयोग, शिक्षक का विद्यार्थी के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार, शिक्षण कार्य के दौरान तकनीकी का प्रयोग तथा शिक्षक का चरित्रवान होना जैसी सभी गतिविधियाँ शहरी व ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को समान रूप से प्रभावित करती है परंतु ई.पी.सी. पाठ्यक्रम के प्रति उनकी रुचि में सार्थक अंतर पाया जाता है जिसका प्रमुख कारण शहरी प्रशिक्षणार्थियों का ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा ई.पी.सी. पाठ्यक्रम के प्रति अरुचि होना है।

शहरी महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों तथा ग्रामीण महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की ई.पी.सी. विषय का अभिरूचि पर पड़ने वाले प्रभाव में अंतर नहीं पाया गया।

परिकल्पना संख्या 6

ई.पी.सी. विषय का वृत्तिगत क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन का शहरी व ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों में अंतर नहीं पाया जाता है। शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थी समान

रूप से अध्यापन व्यवसाय को मानवता की सेवा का एक अच्छा माध्यम मानते हैं। उनका मानना है कि शिक्षक को अपने व्यवसाय के प्रति दायित्व का निर्वाह करते समय विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखते हुए शिक्षण कार्य करवाना चाहिए तथा विद्यार्थियों को शारीरिक दंड की बजाए प्रेमपूर्ण तथा मित्रवत व्यवहार द्वारा शिक्षण कार्य करवाकर अपनी योग्यता का परिचय देना चाहिए।

शहरी महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों तथा ग्रामीण महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की ई.पी.सी. विषय का वृत्तिगत क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव में अंतर नहीं पाया गया।

उपसंहार

- शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में यह शोध काफी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इस शोध से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग करके शिक्षक, प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण कार्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न कर सकता है, शोध का उपयोग विद्यार्थियों के व्यवहारगत परिवर्तन में भी उपयोगी साबित हो सकता है और और भविष्य में विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु वृत्तिगत क्षमता को भी विकसित कर सकता है। यह शोध प्रशिक्षणार्थियों में एक सृजनात्मक समझ विकसित करने में भी सहायक हो सकता है।
- बी.एड. के पाठ्यक्रम में ई.पी.सी. (EPC) विषय और उससे जुड़ी गतिविधियों—जैसे शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग, भ्रमण, और स्मार्ट क्लास—का उपयोग भावी शिक्षकों में सकारात्मक अभिवृत्ति और शैक्षिक गुणों को विकसित करने के लिए किया जा सकता है।
- अध्ययन यह प्रमाणित करता है कि शहरी और ग्रामीण, तथा महिला और पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति और वृत्तिगत क्षमता पर ई.पी.सी. का प्रभाव समान रहता है। इससे भविष्य में शैक्षिक नीतियां बनाते समय इस पाठ्यक्रम को बिना किसी क्षेत्रीय या लैंगिक भेदभाव के सभी वर्गों के लिए समान रूप से लागू किया जा सकता है।
- भविष्य के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शारीरिक दंड के स्थान पर मित्रवत व प्रेमपूर्ण व्यवहार, रेखाचित्र, मानचित्र और तकनीकी के प्रयोग पर अधिक जोर दिया जा सकता है, क्योंकि यह शिक्षण को रोचक बनाता है और विद्यार्थियों में नैतिकता व आदर्शवाद का विकास करता है।
- ई.पी.सी. पाठ्यक्रम में शामिल योग, व्यायाम और पुस्तकीय समीक्षा जैसी पाठ्य सहगामी क्रियाओं का उपयोग शिक्षकों को उनके दायित्वों के प्रति जागरूक करने

और उनकी शैक्षणिक व व्यावसायिक क्षमता को बढ़ाने के लिए एक मानक मॉडल के रूप में किया जा सकता है।

- भावी शोधकर्ता इस अध्ययन को आधार मानकर शिक्षक-छात्र अन्तःक्रिया और बालक के सर्वांगीण विकास (शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक) में शिक्षक की भूमिका पर और अधिक विस्तृत अनुसंधान कर सकते हैं।
- पूर्व में दिए गए बिंदुओं के अतिरिक्त, प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों को विस्तार देते हुए भविष्य (उपसंहार) में शैक्षिक नीतियों, पाठ्यक्रम निर्माण और शिक्षक-प्रशिक्षण के क्षेत्र में इसका निम्नलिखित उपयोग किया जा सकता है:

1. आजीवन अधिगम (Lifelong Learning) और राष्ट्र निर्माण के आधार के रूप में: यह शोध इस बात को स्पष्ट करता है कि किसी भी विद्यालय और शैक्षिक कार्यक्रम की सफलता कुशल, चरित्रवान और निपुण अध्यापकों पर निर्भर करती है। रवीन्द्रनाथ टैगोर के इस दार्शनिक विचार—"एक अध्यापक कभी भी वास्तविक अर्थों में नहीं पढ़ा सकता, जब तक वह खुद कुछ न कुछ सीख न रहा हो"—को भविष्य के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मुख्य आधार बनाया जा सकता है। ई.पी.सी. (EPC) गतिविधियों का भविष्य में उपयोग शिक्षकों को आजीवन शिक्षार्थी बनाए रखने और कोठारी कमीशन (1964-66) के विजन के अनुरूप उन्हें सच्चे 'राष्ट्र निर्माता' के रूप में प्रशिक्षित करने के लिए किया जा सकता है।

2. भयमुक्त और सहयोगात्मक कक्षा प्रबंधन का विकास: भविष्य की शैक्षिक नीतियां बनाते समय इस शोध का उपयोग विद्यालयों को अधिक सकारात्मक वातावरण प्रदान करने में किया जा सकता है। अध्ययन स्पष्ट करता है कि विद्यार्थियों को शारीरिक दंड देने के बजाय शिक्षक का प्रेमपूर्ण और मित्रवत व्यवहार ही उसकी योग्यता का असली परिचायक है। इस निष्कर्ष को आधार बनाकर भविष्य में शिक्षकों के लिए 'कक्षा प्रबंधन' (Classroom Management) की ऐसी विशेष ट्रेनिंग डिजाइन की जा सकती है, जो पूरी तरह से सहयोगात्मक हो और जिससे छात्र-शिक्षक अन्तःक्रिया (Interaction) अधिक मजबूत हो सके।

3. संस्कृति का संरक्षण और सर्वांगीण विकास: शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं है, बल्कि यह संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन व हस्तांतरण का सबसे सशक्त माध्यम है। भविष्य में पाठ्यचर्या (Curriculum) निर्माता इस शोध का उपयोग इस बात को प्रमाणित करने के लिए कर सकते हैं कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का केवल शैक्षिक विकास नहीं, बल्कि उसका शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक विकास करना है। इस सर्वांगीण विकास के लिए भविष्य में शैक्षिक भ्रमण, योग, व्यायाम, पुस्तकीय समीक्षा और

दर्शनशास्त्रियों के विचारों को प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक अनिवार्य रूप से लागू किया जा सकता है।

4. शहरी और ग्रामीण शैक्षिक दृष्टिकोण के अंतर को समझना: शोध में एक बहुत ही महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक तथ्य सामने आया है कि वृत्तिगत क्षमता (Professional capacity) पर तो ई.पी.सी. का प्रभाव दोनों क्षेत्रों में समान है, लेकिन ई.पी.सी. पाठ्यक्रम के प्रति शहरी प्रशिक्षणार्थियों में ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा कुछ अरुचि (Disinterest) पाई जाती है। भविष्य में विश्वविद्यालय और शिक्षाविद् इस निष्कर्ष का उपयोग करके ई.पी.सी. पाठ्यक्रम का पुनर्मूल्यांकन कर सकते हैं। वे इस पाठ्यक्रम को शहरी परिवेश के विद्यार्थियों के लिए अधिक प्रासंगिक, आधुनिक और रुचिकर बनाने के लिए इसमें नई तकनीकी व व्यावहारिक गतिविधियों का समावेश कर सकते हैं।

5. शिक्षण को 'मानवता की सेवा' के रूप में स्थापित करना: यह शोध भविष्य के बी.एड. महाविद्यालयों (जिन्हें शिक्षकों को तैयार करने का कारखाना भी कहा गया है) के लिए एक मार्गदर्शिका का काम करेगा। इसके निष्कर्षों का उपयोग भावी शिक्षकों में यह भाव जगाने के लिए किया जा सकता है कि अध्यापन केवल एक आजीविका नहीं, बल्कि मानवता की सेवा का एक बहुत अच्छा माध्यम है। भविष्य में शिक्षक-प्रशिक्षण के दौरान इस बात पर अधिक बल दिया जा सकेगा कि शिक्षक विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं (Individual differences) को गहराई से समझें और अपने दायित्वों का निर्वाह करते हुए आदर्शवादी व बौद्धिक परंपराओं को सुरक्षित रूप से अगली पीढ़ी तक पहुंचाएं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आत्रेय एस.पी. (1974), मनोविज्ञान में सांख्यिकी, वाराणसी, तारा पब्लिकेशन।
2. अग्रवाल, बी.बी. (1999), आधुनिक भारतीय शिक्षा और समस्याएँ, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
3. अग्रवाल, जे.सी. (1974), थॉट्स ऑफ एज्यूकेशन, नई दिल्ली, आर्थ बुक डिपो।
4. अग्रवाल, जे.सी. (2007) शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध, आगरा-2, विनोद पुस्तक मंदिर।
5. अग्रवाल, जे.सी. (2001), शिक्षा अनुसंधान, नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो।

6. अग्रिहोत्री, रवीन्द्र (2001), भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ, नई दिल्ली, रिसर्च पब्लिकेशन।
7. अरोड़ा रीटा (1977) भारतीय शिक्षा की समस्याएँ एवं नई प्रवृत्तियाँ, जयपुर, विनोद पुस्तक मंदिर।
8. अस्थाना बी. एवं अस्थाना एस. (2005) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
9. ओड एल.के. (2010), शैक्षिक प्रशासन, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
10. अरोड़ा रीटा (2006), शिक्षा में नवचिंतन, जयपुर, शिक्षा प्रकाशन।